International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, January-June 2024, Submitted in June 2024, ISSN -2393-8048

अभिभावक एवं समाज के द्वारा बालक के व्यक्तित्व विकास में सहयोगः एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन

अशोक कुमार, शोधार्थी, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर
डॉ0 अनुराधा सिंह, सहायक आचार्य (मनोविज्ञान विभाग), टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

प्रस्तावित शोध का सारांश

बालक का व्यक्तित्व विकास एक सतत, बहुआयामी एवं मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, जो जन्म से लेकर जीवन पर्यन्त चलती रहती है। इस प्रक्रिया में परिवार, अभिभावक, विद्यालय, मित्र समूह तथा समाज की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बालक का व्यवहार, उसकी सोच, मूल्य, आदतें, सामाजिक समायोजन तथा नैतिक विकास मुख्यतः उसके परिवेश से प्रभावित होते हैं। विशेष रूप से अभिभावक बालक के प्रथम शिक्षक होते हैं, जो उसे भाषा, संस्कार, अनुशासन, नैतिकता एवं सामाजिक व्यवहार की शिक्षा प्रदान करते हैं। दूसरी ओर समाज बालक को व्यापक सामाजिक अनुभव प्रदान करता है, जिससे उसमें नेतृत्व, सहानुभूति, सहयोग, सहिष्णुता तथा उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो बालक का व्यक्तित्व केवल आनुवंशिक गुणों का परिणाम नहीं होता, बल्कि सामाजिक एवं पारिवारिक वातावरण का भी उस पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि परिवार में प्रेम, सुरक्षा एवं प्रोत्साहन का वातावरण हो तथा समाज सकारात्मक एवं प्रेरणादायक हो, तो बालक का व्यक्तित्व संतुलित एवं प्रभावशाली बनता है। इसके विपरीत उपेक्षा, हिंसा, असमानता तथा नकारात्मक सामाजिक प्रभाव बालक के व्यक्तित्व को विकृत कर सकते हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र में अभिभावकों एवं समाज की भूमिका का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। इसमें बालक के व्यक्तित्व विकास की अवधारणा, उसके विभिन्न आयाम, पारिवारिक वातावरण, सामाजिक परिवेश तथा आधुनिक परिस्थितियों में उत्पन्न चुनौतियों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार सकारात्मक अभिभावकीय व्यवहार एवं स्वस्थ सामाजिक संरचना बालक के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होती है।

प्रस्तावना

मानव जीवन का सबसे संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण चरण बाल्यावस्था माना जाता है। इसी अवस्था में बालक के व्यक्तित्व की आधारशिला रखी जाती है। बालक जन्म के समय केवल जैविक गुणों के साथ संसार में आता है, परंतु उसका व्यक्तित्व सामाजिक एवं पारिवारिक अनुभवों के माध्यम से विकसित होता है। व्यक्तित्व विकास में अभिभावक एवं समाज दोनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। बालक जिस वातावरण में रहता है, वही उसके विचारों, व्यवहारों एवं आदर्शों का निर्माण करता है।

अभिभावक बालक के प्रथम समाजीकरण के माध्यम होते हैं। माता–पिता के व्यवहार, उनके संस्कार, शिक्षा, अनुशासन एवं प्रेम का बालक के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि अभिभावक बालक को उचित मार्गदर्शन, स्नेह एवं स्वतंत्रता प्रदान करते हैं, तो बालक आत्मविश्वासी एवं जिम्मेदार बनता है। इसके विपरीत अत्यधिक कठोरता, उपेक्षा या असंतुलित व्यवहार बालक के मानसिक विकास को प्रभावित करता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बालक का प्रारंभिक अनुभव उसके सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करता है।

समाज भी व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समाज बालक को विभिन्न सामाजिक मानदण्डों, रीति–रिवाजों एवं मूल्यों से परिचित कराता है। विद्यालय, मित्र समूह, धार्मिक संस्थाएँ, मीडिया तथा सामाजिक संस्थाएँ बालक के व्यवहार एवं सोच को प्रभावित करती हैं। आधुनिक युग में डिजिटल मीडिया एवं तकनीकी साधनों का प्रभाव भी बालकों के व्यक्तित्व विकास में तेजी से बढ़ा है। सकारात्मक सामाजिक वातावरण बालक में नैतिकता, सहयोग, सहिष्णुता एवं नेतृत्व क्षमता का विकास करता है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से व्यक्तित्व विकास एक जटिल प्रक्रिया है। सिगमंड फ्रायड, एरिक एरिक्सन, जीन पियाजे एवं लेव वाइगोत्स्की जैसे मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व विकास में सामाजिक एवं पारिवारिक कारकों के महत्व को स्पष्ट किया है। फ्रायड ने प्रारंभिक अनुभवों को महत्वपूर्ण माना, जबकि एरिक्सन ने सामाजिक अंतःक्रियाओं को व्यक्तित्व विकास का आधार बताया। इसी प्रकार पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास तथा वाइगोत्स्की ने सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरण को बालक के विकास का प्रमुख तत्व माना।

आज के समय में बदलती सामाजिक संरचना, संयुक्त परिवारों का विघटन, बढ़ती प्रतिस्पर्धा तथा तकनीकी प्रभाव के कारण बालकों के व्यक्तित्व विकास में अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। ऐसे में अभिभावकों एवं समाज की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है कि वे बालकों को सकारात्मक एवं सुरक्षित वातावरण प्रदान करें। प्रस्तुत शोध पत्र इसी संदर्भ में अभिभावक एवं समाज की भूमिका का मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

शोध कुंजी

बालक, व्यक्तित्व विकास, अभिभावक, समाज, मनोवैज्ञानिक अध्ययन, समाजीकरण, पारिवारिक वातावरण, नैतिक विकास, भावनात्मक विकास, सामाजिक समायोजन, शिक्षा एवं संस्कार, व्यवहार निर्माण, आत्मविश्वास, अनुशासन, बाल मनोविज्ञान

प्रस्तावित शोध के सोपान

व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया को विभिन्न सोपानों में विभाजित किया जा सकता है। प्रत्येक सोपान में अभिभावकों एवं समाज की विशेष भूमिका होती है।

1. शैशवावस्था में व्यक्तित्व विकास – शैशवावस्था बालक के जीवन का प्रारंभिक चरण है। इस अवस्था में बालक पूर्णतः अपने माता–पिता पर निर्भर रहता है। माता–पिता का स्नेह, सुरक्षा एवं देखभाल बालक में विश्वास एवं भावनात्मक स्थिरता विकसित करते हैं। यदि इस अवस्था में बालक को प्रेमपूर्ण वातावरण प्राप्त होता है, तो उसमें सकारात्मक भावनाओं का विकास होता है।
2. बाल्यावस्था में सामाजिक व्यवहार का विकास – बाल्यावस्था में बालक विद्यालय एवं समाज से जुड़ना प्रारंभ करता है। इस अवस्था में मित्रों, शिक्षकों एवं सामाजिक वातावरण का प्रभाव बढ़ जाता है। समाज बालक को अनुशासन, सहयोग एवं सामाजिक नियमों की शिक्षा देता है। अभिभावकों का दायित्व होता है कि वे बालक को सही एवं गलत में अंतर समझाएँ।
3. किशोरावस्था में व्यक्तित्व निर्माण – किशोरावस्था व्यक्तित्व विकास का अत्यंत संवेदनशील चरण है। इस अवस्था में बालक में आत्मचेतना एवं स्वतंत्र विचारों का विकास होता है। अभिभावकों का सहयोग एवं उचित मार्गदर्शन किशोरों को सही दिशा प्रदान करता है। समाज भी इस अवस्था में आदर्श एवं प्रेरणादायक वातावरण उपलब्ध कराता है।
4. नैतिक एवं चारित्रिक विकास– व्यक्तित्व विकास में नैतिक मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। अभिभावक बालक को सत्य, ईमानदारी, सहानुभूति एवं अनुशासन की शिक्षा देते हैं। समाज अपने रीति–रिवाजों एवं सांस्कृतिक परंपराओं के माध्यम से बालक में नैतिकता का विकास करता है।
5. भावनात्मक विकास– बालक के व्यक्तित्व में भावनात्मक संतुलन आवश्यक होता है। परिवार में प्रेम एवं सहयोग का वातावरण बालक को मानसिक रूप से मजबूत बनाता है। यदि परिवार में तनाव एवं संघर्ष हो, तो बालक में भय, असुरक्षा एवं आक्रामकता की भावना उत्पन्न हो सकती है।
6. बौद्धिक एवं सृजनात्मक विकास– अभिभावक बालक को शिक्षा एवं प्रेरणा प्रदान करके उसकी बौद्धिक क्षमताओं का विकास करते हैं। समाज विभिन्न सांस्कृतिक एवं शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से बालक की सृजनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करता है।
7. सामाजिक समायोजन –समाज बालक को विभिन्न परिस्थितियों में समायोजन करना सिखाता है। बालक सामाजिक अनुभवों के माध्यम से सहयोग, नेतृत्व एवं सहिष्णुता जैसे गुण सीखता है। अभिभावक उसे सामाजिक व्यवहार के नियमों से परिचित कराते हैं।

प्रस्तावित शोध का महत्व

अभिभावक एवं समाज की भूमिका बालक के व्यक्तित्व विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसका महत्व निम्नलिखित बिंदुओं में स्पष्ट किया जा सकता है–

परिवार बालक के व्यक्तित्व निर्माण की प्रथम पाठशाला है। अभिभावकों के संस्कार एवं व्यवहार बालक के चरित्र को प्रभावित करते हैं। समाज बालक को सामाजिक नियमों एवं नैतिक मूल्यों से परिचित कराता है। इससे बालक एक जिम्मेदार नागरिक बनता है। प्रेमपूर्ण पारिवारिक वातावरण बालक को मानसिक सुरक्षा प्रदान करता है। इससे उसमें आत्मविश्वास एवं सकारात्मक सोच विकसित होती है। अभिभावक एवं समाज बालक में अनुशासन, ईमानदारी एवं कर्तव्यनिष्ठा जैसे गुणों का विकास करते हैं। यदि बालकों को सही सामाजिक एवं नैतिक शिक्षा दी जाए, तो समाज में शांति एवं समरसता स्थापित होती है। सकारात्मक सामाजिक वातावरण बालक में नेतृत्व, निर्णय क्षमता एवं उत्तरदायित्व की भावना विकसित करता है। सुदृढ़ व्यक्तित्व वाले बालक भविष्य में राष्ट्र के जिम्मेदार नागरिक बनते हैं। अतः बालक का व्यक्तित्व विकास राष्ट्र निर्माण से भी जुड़ा हुआ है।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. बालक के व्यक्तित्व विकास की अवधारणा का अध्ययन करना।
2. व्यक्तित्व विकास में अभिभावकों की भूमिका का विश्लेषण करना।
3. समाज के प्रभाव का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करना।
4. बालक के नैतिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास का अध्ययन करना।
5. पारिवारिक वातावरण एवं सामाजिक संरचना के प्रभावों का मूल्यांकन करना।

6. आधुनिक समाज में व्यक्तित्व विकास की चुनौतियों को समझना।
7. बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।
8. अभिभावकों एवं समाज के मध्य समन्वय की आवश्यकता को स्पष्ट करना।

प्रस्तावित शोध का निष्कर्ष

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बालक का व्यक्तित्व विकास केवल जैविक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों से गहराई से जुड़ा हुआ है। अभिभावक एवं समाज दोनों ही बालक के व्यक्तित्व निर्माण में समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अभिभावक बालक को प्रारंभिक संस्कार, प्रेम, अनुशासन एवं नैतिक शिक्षा प्रदान करते हैं, जबकि समाज उसे सामाजिक अनुभव एवं व्यवहारिक ज्ञान उपलब्ध कराता है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बालक का व्यक्तित्व उसके अनुभवों, पारिवारिक वातावरण तथा सामाजिक संबंधों के आधार पर विकसित होता है। यदि बालक को सकारात्मक, सुरक्षित एवं प्रेरणादायक वातावरण प्राप्त हो, तो उसका व्यक्तित्व संतुलित एवं प्रभावशाली बनता है। इसके विपरीत नकारात्मक वातावरण बालक में हीनभावना, आक्रामकता एवं असामाजिक प्रवृत्तियों को जन्म दे सकता है।

आधुनिक युग में तकनीकी विकास एवं बदलती सामाजिक परिस्थितियों ने बालकों के व्यक्तित्व विकास को नई दिशा दी है। सोशल मीडिया, डिजिटल संस्कृति एवं बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण अभिभावकों एवं समाज की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ गई है। आज आवश्यकता इस बात की है कि बालकों को केवल भौतिक सुविधाएँ ही नहीं, बल्कि नैतिक एवं भावनात्मक सहयोग भी प्रदान किया जाए।

अतः यह कहा जा सकता है कि स्वस्थ परिवार एवं सशक्त समाज ही बालक के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास का आधार हैं। यदि अभिभावक एवं समाज मिलकर सकारात्मक वातावरण का निर्माण करें, तो बालक न केवल एक आदर्श नागरिक बनेगा, बल्कि राष्ट्र की प्रगति में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- सरयू प्रसाद चौबे (1992)– शिक्षा के सामाजशास्त्रीय आधार, विद्यार्थी प्रकाशन गोरखपुर
- पी.डी. पाठक व त्यागी (2002) – शिक्षा के सिद्धान्त, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
- डॉ. मधुबाला गुप्ता – ष्बालक के विकास में परिवार व विद्यालय की भूमिकाष् लैब सहायक, गृह विज्ञान (रा.मा.दे. महाविद्यालय विजनौर)
- श्रीमती मंजू त्यागी (2002) ष्बालक के विकास में परिवार व विद्यालय की भूमिकाष् लैब सहायक, गृह विज्ञान (रा.मा.दे. महिला, महाविद्यालय विजनौर)
- भारतीय जनगणना एवं नगर नियोजन विकास जनसंख्या अनुमान।
- नगर नियोजन विभाग अनुमान
- संकलन द्वारा राजस्थान पर्यटक विभाग
- भारतीय जनगणना विभाग 2011